इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ

और

लोकतंत्र की वैचारिकी

रामशरण जोशी

इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां और

लोकतंत्र की वैचारिकी

रामशरण जोशी

रामशरण जोशी

जन्म : 6 मार्च, 1944; अलवर (राजस्थान)। पत्रकार और समाजविज्ञानी। 1980 से 1999 तक *नई दुनिया* के दिल्ली ब्यूरो प्रमुख के रूप में एशिया, अफ्रीका, उत्तर अमेरिका और दक्षिण अमेरिका के विभिन्न देशों की कई बार यात्राएं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और विदेशी मंत्री की राजकीय विदेश यात्राओं की व्यापक रिपोर्टिंग। पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान और चीन के घटनाचक्र के विशेष कवरेज। 1971 में भारत-पाक युद्ध की रिपोर्टिंग और बांग्लादेश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएं।

प्रकाशित रचनाएं : *आदमी बैल और सपने; मीडिया विमर्श; आदिवासी समाज और शिक्षा; हस्तक्षेप मीडिया और बाजारवाद* (संपादित); *अगला प्रधानमंत्री कौन?; कठघरे में; वैश्विक पूंजी का वर्चस्व-प्रतिरोध की विरासत; कतरनों की कोख से उठते सवाल; प्रतिबिंबन; इक्कीसवीं सदी के संकट और यादों के लाल गलियारे : दंतेवाड़ा।*

बिहार सरकार के राजेंद्र माथुर राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार, मध्य प्रदेश सरकार के शरद जोशी सम्मान, दिल्ली हिंदी अकादमी के पत्रकारिता पुरस्कार जैसे कई पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित।

संप्रति : चार दशकों की सक्रिय पत्रकारिता, माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में कार्यकारी महानिदेशक और महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विजिटिंग प्रोफेसर रहने के बाद स्वतंत्र लेखन।

किताब के बारे में...

इस पुस्तक में रामशरण जोशी के उन लेखों को संकलित किया गया है, जिसमें उनका लोकतंत्र संबंधी 'क्रिटिकल' विश्लेषण है। पुस्तक में समय-समय पर लिखे गए उनके इन आलेखों का संकलन ही इस उद्देश्य से किया गया है कि समूचे भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की पेचीदगियां और जटिलताएं उजागर हो जाएं।

पुस्तक को अलग-अलग पांच खंडों में बांटा गया है। पहला खंड है 'विचार'। इस खंड में मुख्य रूप से उन आलेखों को सम्मिलित किया गया है, जिन्हें पढ़कर यह समझा जा सकता है कि दुनिया भर में उदारीकरण के बाद पनपी जटिलताएं किस रूप में सामने आई हैं और समाज किन-किन चुनौतियों का सामना कर रहा है। पुस्तक के दूसरे खंड में 'लोकतंत्र बनाम सामंतवाद' को केंद्र में रखकर लिखे गए सात आलेख हैं। इन आलेखों में सन् '90 के बाद लोकतंत्र और सामंतवाद के ऐतिहासिक संघर्ष और जटिलताएं दिखाई पड़ती हैं। इन आलेखों के माध्यम से इंदिरा गांधी, जेपी से लेकर अरविंद केजरीवाल तक की भूमिका को रेखांकित किया गया है। संसद में खेली गई चालों, उनके मोहरों और उनकी नीतियों पर गंभीरता से विचार किया गया है। तीसरे खंड में संसदीय चुनावी मुद्दे और गठबंधन से संबंधित छह आलेख हैं। पुस्तक के चौथे खंड में समाज-इतिहास से संबंधित चार आलेख हैं। पुस्तक के आखिरी पड़ाव यानी पांचवें खंड में भाषा से संबंधित आलेख संकलित किए गए हैं। इन आलेखों में रामशरण जोशी की भाषा के प्रति चिंता साफ झलकती है। वैश्वीकरण के दौर में भाषायी वर्चस्व का संघर्ष अपने चरम पर दिखाई पड़ता है।

अनुक्रम

[संपादकीय](#) 7

[भूमिका](#) 12

विचार

कैसे हों विकल्प : कुछ विचारणीय सूत्र 21

न्यायपूर्ण विश्व की संकल्पना 36

लोकतंत्र और लोकपाल मसौदों की जंग 48

पूंजीवाद कितना संकट में है? 59

जैसे नंद वैसे ही कारिंदे 67

पूंजीवाद और जातीय सापेक्षता (संदर्भ : दलित पूंजीवाद) 71

उदारीकरण के अंतर्विरोध और प्रतिरोध 83

विज्ञान का धर्म 99

धर्म, पूंजी और साम्राज्य का गठबंधन 105

तटस्थता के प्रतिरोध में आज का 'गीता उवाच' 120

आवश्यकता है जनोन्मुख शिक्षा पद्धति की 124

विषमताओं के द्वीप और हम 131

अमेरिकी लोकतंत्र : समानता का सत्य 136

मार्क्सवाद की प्रासंगिकता व पुनर्रचना 149

द्वंद्वों की अंतहीन यात्रा और एरिक हॉब्सबाम 172

संवाद की जरूरत 187

लोकतंत्र बनाम सामंतवाद

लोकतंत्र का चीरहरण 197

कांग्रेस : उत्तर नेहरूकालीन द्वंद्व 201

चुंबकीय व्यक्तित्व और जादुई नारे का दौर 204

लोकतंत्र की वैचारिक चुनौती 207

लोकतंत्र बनाम वोटतंत्र 213

पी.एम.ओ. और भेदिया प्रकरण 221

वोट-सत्ता और लोकतंत्र 225

संसद / चुनावी मुद्दे / गठबंधन

गुंडा समय के हवाले रहे हम 230

अराजकता की कीमत पर 234

थर्ड फ्रंट के आसार नहीं 240

बदलना होगा एजेंडा 243

विकास का अमानवीय चेहरा 246

चढ़ा नहीं रथयात्रा का सूचकांक 249

समाज / इतिहास

आसान नहीं है बराबर की हिस्सेदारी 253

मानव-विकास और मानव-समता का आधार 257

इतिहास का तमाशाकरण 261

सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ और सिनेमा 264

भाषा / मीडिया / पुस्तक

एक नई हिंदी जन्म ले रही है 273

विश्व मंच पर हिंदी क्यों?	279
भाषायी संकीर्णता और संकीर्णता का चातुर्य	285
आइए, हिंदी का शोक-गीत नहीं, उत्सव गीत गाएं!	293
वर्तमान चुनौतियां और हिंदी पत्रकारिता	301
चाहिए आज के बतिस्ताओं के विरुद्ध एक और मुक्तियुद्ध	311
मार्क्स की वापसी	322
आधुनिक सांप्रदायिकता का पौराणिक एजेंडा	332

संपादकीय

लोकतंत्र एक लोकप्रिय, बहुप्रचलित और बहुअर्थी शब्द है। लोकप्रिय इस अर्थ में कि आज इसका प्रयोग धड़ल्ले से होता है। 'लोकतंत्र' शब्द के प्रयोगकर्ता को यकीन होता है कि वह इस शब्द के अर्थ से वाकिफ है। बहुप्रचलित इस अर्थ में कि यह शब्द वर्तमान दौर में सबसे ज्यादा चलन में है। बहुअर्थी इस अर्थ में कि हर कोई इसका अर्थ अपने विवेक, इतिहासबोध और अनुभव से लगाता है। निश्चित ही आज लोकतंत्र शब्द का इस्तेमाल इतनी बार और इतने तरीके से हो रहा है कि यह अपने आप में अविश्वसनीय-सा लगने लगा है। यह ठीक वैसे ही है, जैसे जो चीज बार-बार दोहराई जाती हो, उस पर संदेह होना लाजिमी है। रामशरण जोशी की यह पुस्तक लोकतंत्र को तरह-तरह से व्याख्यायित करने का प्रयास ही नहीं करती बल्कि मूल रूप से लोकतंत्र की गरिमा, चुनौतियों, संभावनाओं, आशंकाओं और अंतर्विरोधों से भी साक्षात्कार कराती है। इसके अतिरिक्त लोकतंत्र में अंतर्निहित उन तमाम अर्थों और संवेदनशीलता को परत-दर-परत विश्लेषित करती है। इस अर्थ में यह पुस्तक 'लोकतंत्र विमर्श' के रूप में सामने आती है।

इस पुस्तक में रामशरण जोशी के उन लेखों को संकलित किया गया है जिसमें उनका लोकतंत्र संबंधी 'क्रिटिकल' विश्लेषण है। पुस्तक में सन् 1990 से 2015 तक, समय-समय पर लिखे गए उनके इन आलेखों का संकलन ही इस उद्देश्य से किया गया है कि समूचे भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की पेचीदगियां और जटिलताएं उजागर हो जाएं।

पुस्तक को अलग-अलग पांच खंडों में बांटा गया है। पहला खंड है 'विचार'। इस खंड में मुख्य रूप से उन आलेखों को सम्मिलित किया गया है, जिसे पढ़कर यह समझा जा सकता है कि दुनिया भर में उदारीकरण के बाद पनपी जटिलताएं किस रूप में सामने आई हैं और यह किन-किन चुनौतियों का सामना कर रही है। रामशरण जोशी केवल भारतीय लोकतंत्र की चुनौतियों के संदर्भ में ही बात नहीं करते बल्कि उनकी नजर में समूचे विश्व का लोकतंत्र समाहित है। इन आलेखों में पूरे विश्व की लोकतांत्रिक प्रणाली पर लेखक की चिंता साफ झलकती है। आज जिस तरह लोकतंत्र का धुआंधार प्रचलन बढ़ा है, वह वास्तव में सशंकित करता है। रामशरण जोशी की शंका और चिंता भी निर्मूल नहीं है। वे एक ऐसे विश्व की संकल्पना करते हैं, जहां 'जेनुइन स्वतंत्रता व जनोन्मुखी